

2015 I

11066666

11066666

Vidui
151
Acute Vinta

अनकप्रतिमाडीवधायस्तथ ॥ ७ ॥

कृष्ण
कलश
अनक
कुरु
न
वलि

[illegible]

ॐ नमः श्री अनन्ताय ॥ ७॥ ॥ सूर्यार्घ्यः ॥ न्यासः ॥ अर्घ्यपात्रयूजा ॥ आत्मयूजा ॥ वा
नयूजा ॥ ॐ गलपतथनमः ॥ ॐ शुब्रस्थानमः ॥ ॐ रात्रायनमः ॥ ॐ सुरात्रायनमः ॥ ॐ
चक्राय ॥ ॐ यचक्राय ॥ ॐ धागाय ॥ ॐ विधागाय ॥ ॐ जयाय ॥ ॐ विजया
य ॥ ॐ दानयात्राय ॥ ॐ कृष्णयात्राय ॥ ० ॥ आवाहनादि ॥ ॥ ॐ आवाहनक
य ॥ ॐ अनन्तासनाय ॥ ॐ कन्दाय ॥ ॐ नालाय ॥ ॐ पद्माय ॥ ॐ यत्राय ॥ ॐ

कलनाय ॥ ॐ कलिकाय ॥ ॐ अनन्तयत्रासनाय ॥ ॐ धर्माय ॥ ॐ ज्ञानाय ॥
॥ ॐ वैराग्याय ॥ ॐ नेत्र्याय ॥ ॐ अर्धर्माय ॥ ॐ अज्ञानाय ॥ ॐ अवेनाग्याय ॥
ॐ अनेत्र्याय ॥ ॐ अर्धचन्द्रनाय ॥ ॐ उर्ध्वचन्द्रनाय ॥ ॥ पूर्वदिग्गोपना
नै ॥ म ॥ ॐ अनन्तासनाय ॥ ॥ ध्यानै ॥ ॐ हस्तसकृत्किनाशनै ॥ आयत्रायि
वकुर्कुर्तु ॥ दक्षिणैर्दक्षिणैः पद्मैः दद्यात्तु स्वमधःकन ॥ चक्रमूर्धन्यावामंग

ॐ
दां दयात्यु यत्नः ॥ अनन्तं ध्यानं संयत्नं कथितं बुद्धमूलम् । (७७) गवर्तुं धियाः
यूक्तं वामकुक्षौ सलज्जिनी । धीवत्सकोरुधनं गार्धसनविनाजितं ॥ ॥ अनः
कमूर्त्युध्यानं यथानमः ॥ ग्याउरलिः ॥ अनन्तं सैसावमहासमूहं मग्नं समसूद
नवासुदव । अनन्तं वृथविनिथाऊयस्व अनन्तं वृथायनमानमस्तु ॥ ३ ॥ दयया
दि ॥ ॥ उवलदवायनमः ॥ उर्लकष्यन्तयनमः ॥ उनिवृद्धाय २ ॥ उनीलया

लथं २ ॥ ॥ आवाहनादि ॥ उडदकसागवाय २ ॥ उकीवसागवाय २ ॥ उदधिसाग
वाय २ ॥ उकावसागवाय २ ॥ ॥ आवाहनमस्तु ॥ उदवानकनमस्तु सूर्यं नमस्तु
लब्धायितं धर्मार्थकामभाक्षात् मनन्तं यविपूजय ७ ॥ ॥ उर्कं वायवीसहिः
गायनमः ॥ उनावायलायवागीश्वरीसहितायनमः ॥ उमाधवायकान्तिसहिताय २
॥ उगविन्दाय क्रियासहिताय २ ॥ उविष्णुवन्तान्तिसहिताय २ ॥ उमधूसूदनाय

धृतिरुद्रिताय २ ॥ ॐ णिविक्रमाय ॥ ॐ क्रासुद्रिताय २ ॥ ॐ वामनाय प्रीतिरुद्रिताय २ ॥
ॐ श्रीधनाय वीतिरुद्रिताय २ ॥ ॐ द्रष्टा कंठाय मायासुद्रिताय २ ॥ ॐ यद्वनाराय धी
सुद्रिताय २ ॥ ॐ दामादनाय मदिसुद्रिताय २ ॥ ॐ श्रीपूवृषाहमाय लक्ष्मीसुद्रि
ताय २ ॥ ॥ श्रीवाहनादि ॥ ॐ बुद्ध (लनम) ॥ ॐ राक्षनाय २ ॥ ॐ (न) वाय २ ॥ ॐ
सर्वशायिन २ ॥ ॐ श्रीध्वनाय २ ॥ ॐ विश्ववृषाय २ ॥ ॐ महाकालाय २ ॥ ॐ हृष्टि

संज्ञावकाय २ ॥ ॐ अनकाय २ ॥ ॐ विष्णवे २ ॥ ॐ यद्वनाराय २ ॥ ॐ कंठवाय २ ॥ ॐ नव
सिंहाय २ ॥ ॐ वामनाय २ ॥ ॥ यन्त्रिदेवताश्चतुर्दश ॥ ॐ मान्ये २ ॥ ॐ प्रियायेश ॥
ॐ यद्विद्येश ॥ ॐ महावलायेश ॥ ॐ अऊयायेश ॥ ॐ विमलायेश ॥ ॐ रुद्रायेश ॥ ॐ सूर
रुद्रायेश ॥ ॐ रगवलायेश ॥ ॐ पञ्जित्वायेश ॥ ॐ जयायेश ॥ ॐ विजयायेश ॥ ॐ रुद्राय
येश ॥ ॐ सुरादिकायेश ॥ ॥ गुरुनीचतुर्दश ॥ ॥ श्रीवाहनादि ॥ ॐ वसुगलाय

वसुधा १ ननाय २ ॥ ॐ गलागलाय नमः ॥ कपिलाय २ ॥ ॐ पातालाय नमः ॥
८ ज्ञाय २ ॥ ॐ विगलाय नमः ॥ ॐ कर्षलाय २ ॥ ॐ सुगलाय नमः ॥ अविद्या हला
युधाय २ ॥ ॐ निगलाय नमः ॥ गालाकाय २ ॥ ॐ गलाय नमः ॥ नीलयात्राय २
॥ ॐ सुर्लाकाय नमः ॥ अवलरादाय २ ॥ ॐ सुवर्लाकाय नमः ॥ नूत्यानाय २
ॐ सुर्लाकाय नमः ॥ अला कनाथाय २ ॥ ॐ मरुर्लाकाय नमः ॥ हलीन्दाय २ ॥

ॐ जललाकाय नमः ॥ मिथ्यामतिरुषिताय २ ॥ ॐ गथालाकाय नमः ॥ सद्म
मूर्धाय २ ॥ ॐ सत्यलाकाय नमः ॥ सुवर्णाय नमः ॥ चतुर्दशवतान ॥ ॥
श्रवाहनादि ॥ ॐ वासुदेवाय नमः ॥ ॐ कर्षलाय नमः ॥ किमूर्ध
य २ ॥ ॐ यशुमाय नमः ॥ ॐ अनिरुद्धाय नमः ॥ कर्काटक मूर्धय २ ॥
ॐ वज्रलयन मूर्धय २ ॥ ॐ विष्णवे नमः ॥ नवसिंहाय नमः ॥

लमूर्त्यश्च ॥ ॐ महावनाहायकृत् लिङ्गमूर्त्यश्च ॥ ० ॥ आवाहनादि ॥ ० ॥
सनयूजा ॥ ॐ अन्ननायश्च ॥ ॐ वासुकथश्च ॥ ॐ गङ्गाकायश्च ॥ ॐ यन्मायश्च ॥ ॐ महाय
न्मायश्च ॥ ॐ शैवयान्नायश्च ॥ ॐ कृष्णीन्नायश्च ॥ ० ॥ आवाहनादि ॥ ॐ वेनतयायश्च ॥
ॐ त्रिथैश्च ॥ ॐ लज्जैश्च ॥ ॐ कृत्तिल्याथैश्च ॥ ॐ सुष्णीलाथैश्च ॥ ॐ बल्यैश्च ॥ ॐ धावत्यैश्च ॥
ॐ सत्यैश्च ॥ ॐ चानथैश्च ॥ ॐ कानसमूहायश्च ॥ ॐ दधिसमूहायश्च ॥ ॐ सर्विसमू

हायश्च ॥ ॐ ब्रूकसमूहायश्च ॥ ॐ मदिनासमूहायश्च ॥ ॐ स्वादसमूहायश्च ॥ ॐ उद
कसमूहायश्च ॥ ॐ मानसवाववशाश्च ॥ ॐ सर्वतीर्थसागीनथिस्थाश्च ॥ ० ॥ आवा
हनादि ॥ ॐ चन्दन ॥ ॐ यक्षपवीत ॥ ॐ यूप्य ॥ ॐ धूप ॥ ॐ दीप ॥ ॐ नैवेद्यादिकं दत्त्वा ॥ ० ॥
अन्नककुम्भसं ॥ ॐ वराथैश्च ॥ ॐ चृताथैश्च ॥ ॐ मनिकाथैश्च ॥ ॐ तिलाकमाथै
श्च ॥ ॐ सूक्त ॥ ॐ कामधाषाथैश्च ॥ ॐ हंस्यैश्च ॥ ॐ श्रृष्टनायिकाथैश्च ॥ ॐ च

वशे २ ॥ ॐ वन (ले) २ ॥ ॐ धर्म (ले) २ ॥ ॐ धर्म २ ॥ ॐ श्रु २ ॥ ॐ नकुस २ ॥ ॐ तायव २ ॥
ॐ आकाशाय २ ॥ ॐ पृथिव्यै २ ॥ ० ॥ आवाहनादि ॥ ॥ अनन्त प्रतिमास ॥ ॐ मङ्ग
य २ ॥ ॐ कूर्माय २ ॥ ॐ वनाहाय २ ॥ ॐ नव सिंहाय २ ॥ ॐ वामनाय २ ॥ ॐ नामाय २ ॥ ॐ
पद्मनामाय २ ॥ ॐ कृष्णाय २ ॥ ॐ वृक्षाय २ ॥ ॐ कृकिन २ ॥ दण्डवतानाय २ ॥
आवाहनादि ॥ ॥ ॐ मन्वपर्वताय २ ॥ ॐ मन्दनपर्वताय २ ॥ ॐ कैलाश पर्वताय २ ॥ ॐ म

लयपर्वताय २ ॥ ॐ गंधमादनपर्वताय २ ॥ ॐ छीयपर्वताय २ ॥ ॐ हंसकूटपर्वताय २ ॥
॥ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ चन्दन ॥ यज्ञायवीत ॥ यूर्ध्वदद्यात् ॥ ॥ ० ॥ कलशयूजा ॥
ॐ वृक्ष (ले) २ ॥ विष्णवे २ ॥ ॐ महेश्वराय २ ॥ ॐ गंगायै २ ॥ ॐ यमुनायै २ ॥ ॐ सप्तस्वर्णायै ॥ ॐ
गङ्गायै ॥ ॐ कोनिकायै ॥ ॐ कोद्रायै ॥ ॐ नर्मदायै ॥ ॐ सप्तसागरायै ॥ ॐ मार्क
(ले) याय २ ॥ ॐ शान्दायाय २ ॥ ॐ गङ्गायाय २ ॥ विनिष्ठायाय २ ॥ रुद्रायै २ ॥ यमदक्षिणायै २ ॥

विष्णुमित्राय २॥ सफ स विस्था २॥ आदित्यादिनवग्रहस्था २॥ भ्रुवल्हामादिग्रह वि
नश्री विस्था २॥ कलवादिद्वादशमूर्तय २॥ लंकनादिद्वादशमूर्तय २॥ कलिकादिन
वग्रहस्था २॥ विष्णुमित्रादिआगस्था २॥ मेषादिद्वादशमूर्तय २॥ नन्दादिनिधिरस्था २
॥ श्रीमत्सुखाय २॥ श्रीमतीश्वराय २॥ महालक्ष्मीसहिताय २॥ संपूर्णकलश
य २॥ ०॥ आवाहनादि ॥ वन्दन यज्ञाय वीत पूषीदद्यात् ॥ ० ॥ गलपतिपूजा ॥ ३

गलपतिपूजा २॥ विष्णुमित्राय २॥ लंकनादिद्वादशमूर्तय २॥ लम्बादिद्वादशमूर्तय २॥ गजवक्राय २॥ प
वर्णरुद्राय २॥ सिद्धिविनायकाय २॥ गङ्गासूताय २॥ पार्वतीदेवयानन्दाय २॥ उन
यवादिविष्णुमित्राय २॥ ॥ आवाहनादि ॥ ॥ वन्दन यज्ञाय वीत पूषीदद्यात् ॥ ० ॥
गङ्गासूताय २॥ लंकनादि २॥ लङ्काय २॥ समनसाय २॥ सुखीलाय २॥ सुरगणाय २॥
जगन्मातर्या २॥ यैव (गङ्गा) रस्था २॥ ॥ आवाहनादि ॥ वन्दन यज्ञाय वीत पूषी

दद्यात् ॥ ० ॥ कोमानीयूज ॥ ॐ वक्रालये ॥ ॐ मादुष्वर्थे ॥ ॐ कोमार्थे ॥ वेष्टुर्थे ॥ वान
के ॥ ॐ अलये ॥ वामूलार्थे ॥ ॐ महालये ॥ नवदुर्गार्थे ॥ यवानकर्थे ॥ नकिध
वार्थे ॥ मयूवासनार्थे ॥ नकुलाचनार्थे ॥ वामनवृथार्थे ॥ कोमानीमूर्तार्थे ॥ ० ॥
आवाहनादि ॥ चन्दनयज्ञायवीतयूथे दद्यात् ॥ ० ॥ वलियूज ॥ ॐ नृसिगाक्षे नवा
य ॥ नृनृशे नवाय ॥ चतुशे नवाय ॥ कोधशे नवाय ॥ कपालीशे नवाय ॥ रा

१ उन्नतशे नवाय ॥ ४



१६-~~ग~~गवतं श्रीभूतनाय ॥

॥ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

१५०० वल्लभ निरमल दिव्य लवण सस्मिता ॥ आत्मविन्दुर्वयस्य सवदुर्लभा यय ॥ ॥ अनेक वन कंदुलि खेवा लवण
१५०० नन वन कंदुलि खेवा लवण सस्मिता ॥ अनेक वन कंदुलि खेवा लवण सस्मिता ॥ अनेक वन कंदुलि खेवा लवण
कंदुलि खेवा लवण सस्मिता ॥ अनेक वन कंदुलि खेवा लवण सस्मिता ॥ अनेक वन कंदुलि खेवा लवण सस्मिता ॥
हनीषुम कमी न ज्ञयासु न गय के सिद्धु न कमी न गय सुया न विय ॥ अनेक वन कंदुलि खेवा लवण सस्मिता ॥
(सय)

2015 I

बलशेववाय २॥ संहावरीववाय २॥ वृकादवकगयालाय २॥ वक कंठक गयालाय
२॥ लम्बाष्ठक गयालाय २॥ वक लावनक गयालाय २॥ स्कूल ठिक्काय २॥ नक ठिक्का
य २॥ स्वस्मानक गयालाय २॥ वदूकाय २॥ गल यतथ २॥ यागिनीस्था २॥ वळिकाये २॥
सर्वक गयालथा २॥ सर्वरुतथा २॥ सर्वपिष्ठा वस्था २॥ ० ॥ आवाहनादि ॥ वन्दनय
हापवीतय्यन्यथा ० ॥ अनन्तकूस ॥ ७ अनन्ताय २॥ कपिलाय २॥ (लषाय

२॥ लंकर्षलाय २॥ ७ रुलायूकाय २॥ मलिरूषलाय २॥ गीलपालथ २॥ ७ वलरुडा
य २॥ गून्याधवाय २॥ लाकनाथाय २॥ हलीन्दाय २॥ सहस्रहलाय २॥ कृष्णय २॥
यागनिदाये २॥ वळुर्दलमूर्तथ २॥ ॥ आवाहनादि ॥ ७ अयाय २॥ कुवाय २॥ सा
माय २॥ धवाय २॥ अनिलाय २॥ अनलाय २॥ ययूषाय २॥ यराय २॥ ० ॥ आवाहना
दि ॥ ७ अऊकयादाय २॥ अहिवृक्षाय २॥ विद्रुपाकाय २॥ रुनाय २॥ वक्रवृषाय २॥ य

श्रूयुष्मत् २॥ सौराग्य २॥ (नगरनाय २॥ श्रुतिगल्लाय २॥ लुकुमाय २॥ धृष्ट २॥ धूल
य २॥ गल्लाय २॥ वृद्ध २॥ ध्रुवाय २॥ व्याघागाय २॥ हर्षनाय २॥ वज्राय २॥ छद्म २॥ यती
पाताय २॥ वसि यालाय २॥ यनिघाय २॥ निवाय २॥ साश्वाय २॥ छराय २॥ छकाय २॥
वृद्ध २॥ उद्याय २॥ वैध २॥ मषादिघादल नानि २॥ मषाय २॥ वृषाय २॥ मि
थूनाय नमः ॥ कर्कटाय २॥ सिंहाय २॥ कन्याय २॥ छलाय २॥ विक्राय २॥ धनूष २॥ म

कवाय २॥ कृष्णाय २॥ मीनाय ॥ ५३ ॥ श्रुवा रुनादि ॥ ॥ स्नानमनु ४॥ छ श्रुग कान्तदव
त आवा (न) जगत् २॥ गृहात स्नानदव
व कर्णवत् समन्वितं मलयज समायुक्त मिदं गन्धविलयनं ॥ ० ॥ वसु ॥ छ नानायन नृत्त
नाथ ननका छ वगावन ॥ छलाय व्यापकानक शाहि मां सधू सुदन ॥ ॥ चन्दन ॥ छ
नमा स्नानकाय सुख पुदाय श्रीखलु माख्या छ वृचन नैव श्रुत क दवाय नमा छ

गस्मे, प्रिला कनाथ यस्सुवयदाय ॥०॥ यज्ञाय वीत ॥ उदामा दननमस्तु गुदि
मां रवसागमा ॥ वदन्तु शास्त्रीयं च गृहल पन्नधारुम ॥०॥ तास्वान ॥ उदुदुदुदु
निगन्धाय ॥ गन्धि तापूषमालिकी ॥ गृहलत्वं मया दत्ता मनक पत्रमन्वय ॥ माता
पूषा ॥ उमात्या निचसूगन्धनि, मालत्यादीनि वैषसा ॥ मया कृतानि पूजार्थं पूषी
गृहलत्वं मास्तु ॥०॥ दुर्वाकृत ॥ आयूनामन्वय कामानि, वेतानि उतस्तु ॥ अकृता

निष्ठियादुर्वा पूषी गृहलत्वं मास्तु ॥०॥ यन्न ॥ मिलत्य विमलाभा दमलालिकूलसंराव
आनन्दनन्दनाथाने, पद्माक्षी कसू मास्तु ॥०॥ उदयलानीलायला निपूषानि, व्याधि
रुम्ह रुवालिच, यथुर्गुणिष्ठुवाय, पूषकस्याक्षयै राव ॥०॥ उल्लङ्गी ॥ उल्लङ्गम
गनामासि, सदात्वं कलवपिथ ॥ कलवार्थं विचित्राणि, वनदारव (०) रान ॥ त्वदम्
सम्पदे त्रिर्यं, पूजयामि यथाह विं ॥ तथा कुरु पविशार्थं, कलौ मल विनाशनं ॥ मस्तु

भननयः ४५ ॥ ७ ॥ दीत्वा तुलसीदलं । पूजनीं वासुदेवस्य । लङ्काटि तुलसीदेवा ॥
दमन ॥ कन्दर्पसंज्ञां । यविर्गुदमनं ७ ॥ ८ ॥ गङ्गाधरं दृष्टीकं । तुर्किसंज्ञं
दादिमं ॥ १० ॥ धूपं । गन्धसंज्ञं । रवसिंघं । पृथुवसुसमं । सुवासुवननन्दं । माहा
वीर्यं । गङ्गां ॥ ११ ॥ दीपं । मार्कण्डेयं । मल्लारखं । वन्दविम्बाग्रिगेजसं । शून्यकां । पु
काणं । दीपार्यं । पुनिगङ्गां ॥ माह निरुद्धं मालं ॥ ० ॥ ॥ हलं । खड्गं । बादाखाया

तिम् । जंवीनीं । जपूनीं । कदलीरुलमन्यं । सामुकेयनिगङ्गां ॥ ० ॥ ॥ यवान् ॥
तुलसुकपयटाद्यं । कीवसारुसादिरिः । जिल्लिकाम् । कि काद्यं । मल्लायः ४५
निगङ्गां ॥ ० ॥ ॥ नेवद्यं । उयवान् । वसुधायां । कीवसारुसमन्त्रिणं । नमाश्नकस्य
द्वयाय । नेवद्यं । गङ्गां । पुरा ॥ ॥ गामूलं । नागलाकसमूह्यन् । सुवासुगविभादिनीं । न
जः । कान्तिविष्टं । गामूलं । पुनिगङ्गां ॥ ० ॥ ॥ शूर्पं । वनाहकल्यं । मासं । नकलं ॥

अर्थीयं वासुदेवाय वसुदेवस्य वात्मनः । तन्नानकस्वरूपाय अर्धभयतिष्ठकतां ॥
॥ मञ्जुल ॥ जाय ॥ अननकसंसारखादि ॥ १४ ॥ स्तुति ॥ उनमारुगवर्तणी अनन्ताय ॥
निवद्धवद्वानककानकवद्धधानागिधावयत्तयानककालं । गगारुवद्यः यनमात्म
यागी गभोनमाइनकसुखपदाय ॥ अननकसंसारविभायनाय सर्वस्मिन्सर्ववृद्धि
दाय । नमास्त्वनन्ताय मरुध्वनाय गेलाकनाथाय वनपदाय ॥ अननकवृत्तविर

षिष्टधी मनकलक्ष्मी विदधामि कुष्ठः ॥ अननकशागम्युदयासिलाक अननकवृ
त्तकनमयुद्धः ॥ नमास्त्वनन्ताय मरुसुमूर्तिथ सहसुयादाक निबान्वाद्ध
सहसुनाभ पूरुषाय साध्वी सहसुकापीयूगभिलानमः ॥ नैवद्ययुषाम्बवधू
पदीय विचिगुगन्मदिसमसुपूजां । गुरुलदवन्ममायनीतां विचिगुसंसारविभा
यनाय ॥ ० ॥ याथाहमिशादि ॥ ॥ नमस्तुते ॥ वनकाकार्य ॥ वनीकाय ॥ ॥ अननक

पुनश्च फ्रामि अन्नक केवनामग ४॥ अन्नक कावका राखा मनक स्य पदादत ४॥ ०॥
वतता नक जय ७॥ अन्नक संसा नखादि १४॥ वतता नक रु क वन्धन ॥ मरुगाणि
जगत्सूरी कुवना निवृद्ध ४॥ धर्माधिकामभा काली स्वक वधा नया मय ४॥ श्री गणेशाय नमः ॥
॥ ०॥ तावक वन्धन पूष्य दया ७॥ गतवर्ष तावक यकाल्य सुगन्ध च नन लय य ७॥ ता
वका लानम ४॥ ७॥ नमा सुदव देवाय, विष्णु य धनाय च । सृष्टि यन्त्रि त स स्त्राय वि

व्यमूर्तिनि मा सुत ॥ देव सक धियका डी सन सग थ ॥ वता या रथान ॥ देव सक यार्थना
॥ अन्नक सर्व सावाना मनक रुल वरुली ॥ ध्यान न रु ल देव मम देव रु ऊन्म नि ॥
अन्नक पूष्य सम्य नै कू नू ली म मदावर्त ॥ यथा शिल विता वा फि कू नू ली म मदावर्त ॥ ०॥
मलु ल वि स र्ज नै वा काल पूजा ॥ वती अर्घ या शा द क न अरि थ का दि क ॥ अजी वा द ४॥
प्रास न का व थ ७॥ ॥ पुन ४ अय न द्रि य राग यथा वि धि व सू ऊ थ ७॥ देव स्य द कि व

पाद 'द किन' सृष्टा दृया ७॥ सर्वस्ववृत्ती पूजा मायाय विधिवन्मया खतादीनि
खननत्वं विष्णु सा कं यदृक्या ॥ नूनागि विकानिय निरु ण नि यानीह कर्माणि म
या कृतानि ॥ कमस्वर्वा तानि समकमस्व यया हि रुष्ट ४ पूनवागमाय ॥ कलन शि
का ॥ ० ॥ ७ ॥ ० ॥ ॥ निमूनक वग विधि ४ समाफ ४ ॥
~~सर्वस्ववृत्ती पूजा मायाय विधिवन्मया खतादीनि~~
नरसुनन ॥ ७ ॥

१ सर्वस्ववृत्ती पूजा मायाय विधिवन्मया खतादीनि

१ सर्वस्ववृत्ती पूजा मायाय विधिवन्मया खतादीनि ॥
१ सर्वस्ववृत्ती पूजा मायाय विधिवन्मया खतादीनि ॥
अनक वग ॥ मायादिन रुला ॥ पुरु ॥

१ श्यादि ० श्रु कलम १ श्रु कलम १ श्रु ० पाप नि र्मु क्त्वा रुमसिद्धि य्ग यो र्ग कि न श्रु
य न धान्य यत्र म नति या फ य च उ द ग व र्षा व ध न तै र्ग क त्रि ष्ठा ॥ ०० ॥ य न क व
ता त्र र्ग स क ल्य ४ ॥ ० ॥

सम्बन्ध ८४ गणराज्यदशकु यवर्द्धनी शुक्लवान धकृत्तु श्री २ नमो मुखालया
ध्यानां यागया कला तया निष्क्रिया नूनैवेत रभया दिन श्रमा